गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है । इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था । तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है ।

परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा । कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो !

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छूआ-छुऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं । यह काक भुशुंडि भी विचित्र पक्षी है– एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित ।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के । उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है । इतना ही नहीं। हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है । दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं ।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई । निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है जो संभवत: घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं ।

काकद्वय की चोंचो के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अत: वह निश्चेष्ट -सा गमले से चिपटा पड़ा था ।

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाए ।

परंतु मन नहीं माना– उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया ।

रुई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे-जैसे उसके नन्हे से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गईं।

कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका । तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा ।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं ।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे । मैंने फूल रखने की एक हलकी डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया ।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा । वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था । परंतु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था ।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला ।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता । उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती ।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लंबे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघुगात लिफाफे के भीतर बंद रहता । इस

अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घटों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता ।

भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता ।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया । नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी । बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं ?

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है ।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली । इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी ।

आवश्यक कागज-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है । मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा । तब से यह नित्य का क्रम हो गया ।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता ।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी । कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में ।

मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परंतु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता ।

गिल्लू उनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता । बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता । काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था ।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा । उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता । सब उसे काजू दे आते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा ।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिए पर सिरहाने बैठकर नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता ।

गरमियों में जब मैं दोपहर मैं काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता न अपने झूले में बैठता । उसने मेरे निकट रहने के साथ गरमी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था । वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता ।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया । दिन भर उसने न कुछ खाया न बाहर गया । रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था ।

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया । परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की की जाली बंद कर दी गई है, परंतु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर बसंत आता ही रहता है ।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है – इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी – इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे संतोष देता है ।

●

शब्दार्थ :

गिल्लू – गिलहरी; गिलाई, चेखुरा, चूहे की तरह की मोटी रोएंदार पूँछ का छोटा जीव जो पेड़ों पर रहता है । काक भुशुण्डि – एक ब्राह्मण जो लोमश मुनि के शाप से कौआ हो गये थे और प्रभु श्रीराम के बड़े भक्त थे । अवमानित – अपमानित । पितरपक्ष – कुआँर की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय जब मृत पूर्व पुरुषों के नाम पर श्राद्ध आदि किया जाता है । चमेली – चंपक बेलि पुष्प । कीलें – काँटा, खूँटी । सिरहाने – चारपाई में सिर की ओर का भाग । वासंती – मदनोत्सव, वसंत-संबंधी । सोनजुही – एक प्रकार का पीला फूल । अनायास – आसानी से । हरीतिमा – हरियाली । लघुप्राण – छोटा जीव । छूआ – छुऔवल – छूने– छिपनेका खेल । समादरित – विशेष आदर । अनादरित – आदर का अभाव, तिरस्कार । अवतीर्ण – प्रकट । कर्कश – कटु, कानों को न भानेवाला । काकद्वय – दो कौए । निश्चेष्ट – बिना किसी चेष्टा या हरकत के । आश्वस्त– निश्चित । स्निग्ध – चिकना । विस्मित – आश्चर्यचकित । लघु गात – छोटा शरीर । अपवाद – सामान्य नियम को बाधित या मर्यादित करनेवाला । घोंसला – नीड़ । परिचारिका – सेविका । मरणासन्न – जिसकी मृत्यु निकट हो । उष्णता – गरमी । पीताभ – पीले रंग का ।

प्रश्न और अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :**

(क) सोनजुही में लगी पीली कली को देखकर लेखिका के मन में कौन-से विचार उमड़ने लगे ?

(ख) गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया ?

(ग) लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

(घ) गिल्लू का कार्य-कलाप कैसा था ?

(ङ) लेखिका को क्यों ऐसा लगा कि गिल्लू को मुक्त करना आवश्यक है ?

(च) लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू क्या करता था ?

(छ) गरमी से बचने का कौन-सा उपाय गिल्लू ने खोज निकाला था ?

(ज) गिल्लू की किन चेष्टाओं से लेखिका को लगा कि अब उसका अंत समय समीप है ?

(झ) सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है ?

(ञ) लेखिका को उस लघुप्राण गिल्लू की खोज क्यों थी ?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :**

(क) किसे देखकर लेखिका को गिल्लू का स्मरण हो आया ?

(ख) गिल्लू लेखिका को कैसे चौंका देता था ?

(ग) सोनजुही की स्वर्णिम कली को देखकर लेखिका को क्या लगा ?

(घ) कौवे को कब सम्मानित किया जाता है ?

(ङ) लघुप्राण क्यों निश्चेष्ट-सा गमले में चिपटा पड़ा था ?

(च) भूख लगने पर गिल्लू क्या करता था ?

(छ) गिल्लू का नित्य का क्रम कैसा था ?

(ज) लेखिका की अस्वस्थता के समय गिल्लू का हटना क्यों एक परिचारिका के हटनेके समान लगता था ?

(झ) गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत क्यों आ गया ?

(ञ) कौन-से स्पर्श के साथ ही गिल्लू किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए :

(क) लघुप्राण किसे कहा गया है ?

(ख) दो कौवे कैसा खेल खेल रहे थे ?

(ग) गिल्लू के जीवन में प्रथम बसंत आने पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(घ) गिल्लू किसका नेता बनकर हर डाल पर उच्छलता-कूदता रहता था ?

(ङ) किसके पास बहुत- से पशु-पक्षी हैं ?

(च) गिल्लू का प्रिय खाद्य कौन-सा था ?

(छ) लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू कहाँ बैठता था ?

(ज) गिलहरियों के जीवन की अवधि कितने वर्ष से अधिक नहीं होती ?

(झ) गिल्लू ने कैसी स्थिति में लेखिका की उँगली को पकड़ा था ?

(ञ) गिल्लू को कहाँ समाधि दी गयी ?

4. निम्नलिखित अवतरणों के अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है ।

(ख) यह काक भुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है – एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित ।

(ग) उसका हटना एक परिचारिका के हटनेके समान लगता ।

(घ) प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ।

(ङ) उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे सन्तोष देता है ।

5. रिक्त स्थानों को भरिए :

(क) कौन जाने ________ के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो ।

(ख) ________ की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी ।

(ग) हमने उसकी ________ संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया ।

(घ) जिसे उसने बचपन की ________ स्थिति में पकड़ा था ।

(ङ) ________ छोटे फूल में खिल जानेका विश्वास मुझे सन्तोष देता है ।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर दिये गये विकल्पों से दीजिए :

(क) दो कौवे कैसा खेल खेल रहे थे ?

(i) दौड़ लगानेका (ii) छूआ - छुऔवल (iii) खाना खाने का (iv) गेंद

(ख) लेखिका के किस विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी ?

(i) शिव पुराण (ii) काक पुराण (iii) सूर्य पुराण (iv) नृसिंह पुराण

(ग) लेखिका के कमरे में किसकी गंध हौले-हौले आने लगी ?

(i) सोनजुही (ii) बसंत (iii) नीम-चमेली (iv) गुलाब

(घ) गिल्लू का कौन-सा खाद्य प्रिय खाद्य था ?

(i) चावल (ii) बिस्कुट (iii) केला (iv) काजू

(ङ) गिलहरियों के जीवन की अवधि कितने वर्ष से अधिक नहीं होती ?

(i) एक (ii) दो (iii) तीन (iv) चार

भाषा-ज्ञान

1. प्रस्तुत पाठ में आये हुए निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दीजिए :

स्वर्णिम, समादरित, अपनापन, लगाव, परिचारक, झूला ।

– ये शब्द कुछ प्रत्ययों के मेल से बने हैं जो इस प्रकार हैं–

स्वर्णिम	=	स्वर्ण + इम	समादरित	=	समादर + इत
अपनापन	=	अपना + पन	लगलव	=	लगना + आव
परिचारिक	=	परिचार + इक	झूला	=	झूलना + आ

इन शब्दों के अंत में लगनेवाले शब्दांश प्रत्यय हैं । **जो शब्दांश धातु, क्रिया या शब्दों के अंत में लग कर नये शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं ।** प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं – कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय । धातु या क्रिया के अंत में लगनेवाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहे जाते हैं और उनके मेल से बने शब्द को कृदन्त पद कहा जाता है । संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के बाद लगनेवाले प्रत्यय को तद्धित प्रत्यय और इनके मेल से बने शब्द को तद्धितान्त पद कहा जाता है ।

2. पाठ में आये इन शब्दों पर ध्यान दीजिए :

– नीम-चमेली, दोपहर, जीवन-यात्रा, मरणासन्न ।

– इन शब्दों को समास कहा जाता है । **परस्पर संबंध रखनेवाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहा जाता है ।**

जैसे – नीम और चमेली = नीम-चमेली

दो पहरों का समूह = दोपहर

जीवन की यात्रा = जीवन-यात्रा

मरण को आसन्न (पहुँचा हुआ) = मरणासन्न

–ये शब्द क्रमशः द्वन्द्व समास, द्विगु समास एवं संबंध तत्पुरुष तथा कर्म तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं ।

3. **किसी भी प्राणी, पदार्थ, स्थान, गुण आदि का बोध करानेवाले शब्द को संज्ञा कहा जाता है । इसके पांच भेद हैं :**

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ख) जातिवाचक संज्ञा

(ग) भाववाचक संज्ञा (घ) समुदायवाचक संज्ञा

(ङ) द्रव्यवाचक संज्ञा

निम्न पंक्तियों में रेखांकित किये गये संज्ञा-शब्दों का भेद बताइए :

(क) सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी है ।

(ख) गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती ।

(ग) उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है ।

(घ) नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में आने लगी ।

(ङ) दिनोंदिन सोने का भाव बढ़ता जा रहा है ।

(च) गिल्लू गिलहरियों के झुंड का नेता था ।

4. कोष्ठक में दिये गये शब्दों की भाववाचक संखाएँ बनाकर रिक्त स्थान भरिए :

(क) कभी किसी की ________ नहीं करनी चाहिए । (बुरा)

(ख) परिश्रम करने पर ________ मिलती है । (सफल)

(ग) बुजुर्ग की ________ से हम मुग्ध हो गये । (सज्जन)

(घ) प्रत्येक मनुष्य को अपने ________ का ध्यान रखना चाहिए । (स्वस्थ)

5. विशेषण के साथ सही संज्ञा शब्द को मिलाइए :

पीली – प्रियजन	नीले – कली	सघन – आँखें
झब्बेदार – बत्ती	दूरस्थ – हरीतिमा	चमकीली – रोएँ
स्निग्ध – पूँछ	मधु – स्वर	पतली – काँच
		कर्कश – सन्देश

6. निम्नलिखित शब्दों का विलोम / विपरीत शब्द लिखिए :

जीवन	________________	प्रभात	________________
विश्वास	________________	सन्तोष	________________
आवश्यक	________________	अपनापन	________________

7. निम्नलिखित वाक्यों में उचित परसर्ग शब्द भरिए :

(i) वह मेरे पैर तक आकर परदे __________ चढ़ जाता ।

(ii) सारा लघुगात लिफाफे __________ बन्द रहता ।

(iii) इस मार्ग __________ गिल्लू ने मुक्ति की सांस ली ।

(iv) नीम - चमेली की गंध मेरे कमरे __________ आने लगी ।

(v) फिर गिल्लू __________ जीवन का प्रथम बसंत आया ।

8. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदल कर लिखिए :

उदाहरण : महादेवी ने गिल्लू के घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया ।

कर्मवाच्य में – महादेवी के द्वारा गिल्लू के घावों पर पैंसिलिन का मरहम लगाया गया ।

(क) उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला । ....

(ख) मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया । ....

(ग) महादेवी ने उसे तार से खिड़की पर लटका दिया । ....

(घ) हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे । ....

(ङ) गिल्लू ने मुक्ति की साँस ली । ....

9. वचन बदलिए :

कली ________________	आँख ________________
कौवा ________________	गिलहरी ________________
पक्षी ________________	झूला ________________
गमला ________________	हंस ________________

10. लिंग स्पष्ट कीजिए :

भूख ________________	पानी ________________
गंध ________________	झुण्ड ________________

दौड़ ________________ जीवन ________________

पूँछ ________________ पीढ़ी ________________

11. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची रूप लिखिए :

दीवार ________________ जीवन ________________

पुरखे ________________ प्रयत्न ________________

आँख ________________ आवश्यक ________________

प्रभात ________________ घर ________________

अभ्यास - कार्य

1. निम्नलिखित शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखिए :

स्वर्णिम ____________ ____________ ____________ ____________

निश्श्रेष्ट ____________ ____________ ____________ ____________

स्निग्ध ____________ ____________ ____________ ____________

हरीतिमा ____________ ____________ ____________ ____________

आश्वस्त ____________ ____________ ____________ ____________

2. क्रिया-शब्द से प्रत्यय - ना हटानेसे क्रियार्थक संज्ञा-शब्द बनता है ।

जैसे :- दौड़ना – दौड़ उछलना-कूदना – उछल-कूद सोचना – सोच

पकड़ना – पकड़ पहुँचना – पहुँच माँगना – माँग

3. हिन्दी में अनुस्वार और चन्द्रविन्दु के प्रयोग तथा उच्चारण पर ध्यान दीजिए :

हंस – अनुस्वार, व्यंजन का उच्चारण

साँस – चन्द्रविन्दु, अनुनासिक स्वर का उच्चारण

निम्नलिखित शब्दों का सही उच्चारण कीजिए :

अनुस्वार – संधि, चोंच, पंजा, बसंत, झुंड, घोंसला, ठंडक, अंत ।

अनुनासिक स्वर – काँव – काँव, पहुँचना, बूँद, मुँह, उँगली, काँच, झाँकना, आँगन ।

4. अर्थ देखिए और समझिए :

के निकट – के पास, के समीप

के बहाने – के कारण

के अतिरिक्त – के बिना

इस तरह के शब्द प्रस्तुत पाठ से छाँटिए ।

■ ■ ■